इतिहास महज अतीत का आईना नहीं होता वरन वह वर्तमान के लिए संदेश और मार्गदर्शन भी होता है। हावल्यान ने कहा है कि अवधारणा भूतकालीन नहीं वर्तमान सापेक्ष भी है। इस दृष्टि से प्रसाद यदि इतिहास में जाते हैं तो सिर्फ अतीत के गौरव से आह्लादित होने के लिए नहीं बल्कि वर्तमान के लिए रास्ता ढूँढने के लिए भी। प्रसाद जी की इतिहास चेतना उनकी समकालीन चेतना से जुड़कर युग दृष्टि का निर्माण करती है।

प्रसाद जी 'चंद्रगुप्त' के भारि राष्ट्र की सोई हुई शक्ति को जगाने की कोशिश करते हैं। उन्होंने दिखाया है कि—

जब तक देश खंड राज्यों में बँटा हुआ था तो एक-एक करके राज्य सिकंदर द्वारा पददलित होने लगे थे, लेकिन जैसे ही मालवों, मागधों और क्षुद्रकों की सेना एक होकर सेल्यूकस का मुकाबला करती है तो सेल्यूकस पराजित हो जाता है। अतः हमारी एकता में ही देश की अखंडता निहित है। इस एकता के जरिए ही हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर सकते हैं।

प्रसाद जी ने अपने समय के तत्कालीन राष्ट्रीय नेतृत्व की तत्परता को देखा था। इस राष्ट्रीय चिंता को उन्होंने स्वातंत्र्य रक्षा से जोड़कर सिंहरण के मुख से कहलवाया है – "आर्यावर्त का भविष्य लिखने के लिए कुचक्र और प्रतारणा की लेखनी और मसि प्रस्तुत हो रही है। उत्तरापथ के खंड-राज्य द्वेष से जर्जर हैं, शीघ्र भयानक विस्फोट होगा।" इस राष्ट्रीय त्रासदी की ओर स्वयं चाणक्य भी संकेत करता है, "दस्यु और म्लेच्छ साम्राज्य बना रहे हैं और आर्य जाति पतन के कगार पर खड़ी एक धक्के की राह देख रही है।" प्रसाद जी चाहते थे कि भारतीय जनता अपने

क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर एकत्व का परिचय दे। अलका पर्वतेश्वर से कहती है—
"पराधीनता से बढ़कर और विडंबना क्या हो सकती है। राष्ट्र-प्रेम के द्वारा ही विजय प्राप्त की जा सकती है।" इस प्रकार प्रसाद ने प्राचीन से वर्तमान में पहुँचकर भारतीय जनता को बता देते हैं कि पराधीनता से मुक्ति का एक ही जरिया है — 'राष्ट्रप्रेम'।

प्रसाद जी के समय में समाज क्षेत्र, भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि के आधार पर बँटा हुआ था। यही स्थिति लगभग प्राचीन भारत में भी रही। चाणक्य से चंद्रगुप्त कहता है, "मैं मागध हूँ और यह मालव।" चाणक्य तुरंत इसका प्रतिवाद करता है- "तुम मागध हो और यह मालव, यही तुम्हारे मान का अवसान है न? परंतु आत्मसम्मान इतने से ही संतुष्ट नहीं होगी। मालव और मागध को भूलकर जब तुम समग्र आर्यावर्त का नाम लोगे तभी वह मिलेगा।" चाणक्य की सलाह पर अंततः असर करती है। सिंहरण कहता है— "

— "मेरा देश मालव ही नहीं गांधार भी है और समग्र आर्यावर्त भी।" यह राष्ट्रीय दृष्टि जो प्रतीपता को अतिक्रमित कर के आती है। अलका भी सिंहरण से कहती है कि, "मैं समस्त आर्यावर्त की हूँ।"

प्रसाद जी के समय में सांप्रदायिक स्तर पर हिंदू-मुस्लिम संघर्ष चल रहा था। उन्होंने इस नाटक में बौद्ध-ब्राह्मण संघर्ष के जरिए इस राष्ट्रीय समस्या को सामने रखा है। जब-जब राजा अयोग्य होता है वह जाति या धर्म के नाम पर जनता को बाँटकर सत्ता पर काबीज करना चाहता है। नंद भी बौद्धों एवं ब्राह्मणों को आपस में लड़ाकर अपनी सत्ता कायम रखना चाहता था। चाणक्य जनता को आगाह करता है कि - "यवन आक्रमणकारी बौद्ध एवं ब्राह्मण का फर्क नहीं करेंगे।"

प्रसाद अपने समय के जातीय संघर्ष को भी ब्राह्मणों और क्षत्रियों के संघर्ष के रूप में दिखलाते हैं। चाणक्य को ब्राह्मण होने के कारण ही नंद के दरबार में अपमानित

होना पड़ा था। नंद ने ब्राह्मण शकटार के पुत्रों का वध करवाया था। चाणक्य को देखकर वह कहता है, "ब्राह्मण! ब्राह्मण!! जिधर देखो कृत्या के समान इनकी शासित ज्वाला धधक रही है।" चाणक्य भी नंद को शूद्र कह कर उपेक्षित करता है। ब्राह्मण होने के कारण ही पर्वतेश्वर के दरबार में चाणक्य का अपमान होता है। तक्षशिला में आंभिक भी चाणक्य से कहता है — "रे ब्राह्मण! मेरे ही राज्य में रहकर मेरे ही अन्न जल से पलकर मेरे ही विरुद्ध कुचक्र का सृजन।" चाणक्य भी इसका उत्तर अहंकार से देता है — "ब्राह्मण न किसी के राज्य में रहता है और न ही किसी के अन्न-जल से पलता है। वह स्वराज्य में रहता है और अमृत होकर जीता है।"

ब्राह्मण-क्षत्रिय-संघर्ष के अलावा इस नाटक में क्षत्रिय-शूद्र-संघर्ष भी है। पर्वतेश्वर नंद की पुत्री कल्याणी से सिर्फ इसलिए विवाह नहीं करता कि नंद उसकी दृष्टि में शूद्र

शुद्ध है। जब पर्वतेश्वर पर सिकंदर आक्रमण करता है, तो नंद इसी कारण पर्वतेश्वर की मदद में सेना नहीं भेजता है। लेकिन चाणक्य की दूरदर्शिता, राष्ट्रीय-चेतना और निःस्वार्थ भावना ने मालव, क्षुद्रक और गांधार सभी को आर्यावर्त का अंग बना देती है।

प्रसाद की राष्ट्रीय दृष्टि काफी व्यापक है। वह मानवतावाद की बुनियाद पर खड़ी है। कार्नेलिया से गीत गवाकर उन्होंने अपनी राष्ट्रीय-चेतना की अभिव्यक्ति की है! "अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को,
मिलता एक सहारा।"

यह हिंदुस्तान महज हिन्दुस्तानियों का नहीं यह बेघरों का घर है। कार्नेलिया भारत की प्रशंसा करते हुए कहती है— " यह सपनों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पलना, यह प्रेम की रंगभूमि — भारत भूमि क्या कभी भुलाई जा सकती है। अन्य

देश यदि मनुष्यों की जन्मभूमि है तो भारत मानवता की भूमि है।"। सिकंदर भी मुक्त कंठ से भारत की प्रशंसा करता है - "मैं तलवार खींचे हुए भारत आया हृदय देकर जा रहा हूँ।"

=